अथ हवन सामग्री

घड़ा १, करवा १, सराई २०, हंडला १, चावलों सहित दीवे छोटे १०, केले ४, सरे ४, बन्दरवाल, हार-फूल, दूबके नाल, कुशा, पान ३०, आम की टहनी १।

(पंच-पल्लव)—आम की टहनी, बड़ की, गूलर की, पीपल की, जामन की। (नवग्रह समिधा) ढाक की लकड़ी, आखे की, खैर की चिरचिटे की, पीपल की, गूलर की, जांड की, दूब के नाल। (पंचरत्न)—सौना-चांदी तांवा मूंगा मोती। (सप्त मृत्तिका) घोड़े के नीचेकी, हाथी के नीचे की बम्बीकी, नदी के संगम की, तालाब की, राज्य-द्वार की, गोशाला की। (पंचगव्य) गोमूत्र-गोगोबर गोघृत-गोदही गो-दूध।

पंच रंग ≈) का, गुलाल ≈) का, हलदी की गांठ १, धूप ≈) का, कपूर ≈) का, सुपारी ५०, लाल चन्दनका चूरा ≈), सफेद चन्दन का चूरा –) का, शहद –) का, काली मिर्च–) की, सितावर)॥ की, सिन्दूर –) का, कमलगट्टे ≈) के, गूगल ≈) का, भोजपत्र –) का, छोटी इलायची ≈) की, इन्द्र जौ –) के, कलावा २ गुच्छी, लौंग ≈) की, गोला १, नारियल २, पांचो मेवा ढाई पाव, मैनफल २, जायफल २ सामग्री कुटीहुई १ सेर, रोली –) की, केशर ≈) का, धोती जोड़ा १, अंगोछे ७, लोटा १, जनेऊ ७, लाल कपड़ा २ गज, उड़द की दाल १ छटांक; दूध कच्चा पाव सेर, दही –) का, गंगारज-गंगाजल-अनार १, पालक, या साग बथुवा १ पाव, गिलोय हरी१ टहनी, खीर ऽ॥सेर, हलवा ऽ॥, ऋतुफल ५, पेड़े ॥) के, मिश्री ≈) की, बताशे छोटे १) के, पीली सरसों ऽ– छटांक, जौ १। सेर कलश के नीचे (पीली मिट्टी) गुम्मा ईंट २०, आसन ३, चावल १ सेर, जव॥ सेर, तिल ऽ२ सेर, घृत ऽ१॥ सेर, बूरा १॥ सेर, लकड़ी ढाक या आमकी वीस सेर।

तिलार्द्धं तंडुलाप्रोक्ता तंडुलार्द्धं यवास्तथा।
तण्डुलैस्त्रिगुणं चाज्यं यथेष्ट शर्करामना॥
तिलाधिक्ये भवेल्लक्ष्मी यवाधिक्ये दरिद्रता।
घृताधिक्ये भवेन्मुक्तिः सर्वसिद्धिस्तु शर्करा॥

तिल ऽ२ चावल ऽ१ जव ऽ॥ घी ऽ। मीठा श्रद्धानुसार मिलावें।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ हवन पद्धतिः

भाषा टीका सहित



(अथ वेदीं रचयित्वा)

पहिले पाधा मिट्टी की दो वेदी बनावें, एक हवन की और एक नवग्रह की। नवग्रह की उत्तर में और हवन की दक्षिण में, फिर उन दोनों वेदियों के चारों कोणों में ४ केले के खम्भ और ४ सरे खड़े करें और उसके चारों तरफ आम के पत्तों की बन्दरवाल बांधें फिर उन दोनों वेदियों के ऊपर [चन्दोया] लाल कपड़ा तानें, फिर उन वेदियों पर पाधा चून से चौक पूरें जैसे पूर्व ही लिखी है। नव ग्रह की जो वेदी है उस पर पाधा नीचे लिखे श्लोकों के प्रमाण से रङ्ग आकार सहित नवग्रह स्थापित करें।

(अथ नवग्रहस्थापनविधिः)

मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे। लोहितं दक्षिणे विद्याद् बुधपूर्वं तथोत्तरे ॥१॥

वेदी के बीच में सूर्य नारायण की स्थापना करे। पूर्व और दक्षिण की कोण में चन्द्रमा, दक्षिण में मंगल, पूर्व उत्तर की कोण में बुध ॥१॥

उत्तरेण गुरुं विद्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवम्। पश्चिमे च शनिं विद्याद्राहुं दक्षिणपश्चिमे ॥२॥

उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र देवता, पश्चिममें शनिश्चर, दक्षिण और पश्चिम की कोणमें राहु ॥२॥

पश्चिमोत्तरतः केतुं ग्रहस्थापनमुत्तमम् ॥ भास्करं वर्तुलाकारम् अर्द्धचंद्रं निशाकरम् ॥३॥

पश्चिम और उत्तर की कोण में केतु, इस प्रकार ग्रह स्थापन करे ॥३॥

सूर्य का गोल आकार बनावें। चन्द्रमा का आधा गोल बनावें।

त्रिकोणं मंगलं चैव बुधञ्च धनुराकृतिम्।
पद्माकारं गुरुञ्चैव चतुष्कोणं च भार्गवम् ॥४॥

मंगल का तीन खूंट का आकार बनावें। बुध का धनुष जैसा। बृहस्पति का पद्म जैसा। शुक्र का चार खूंट का आकार बनावें।

खड्गाकृतिं शनि विद्यात् राहुञ्च मकराकृतिम्॥ केतु ध्वजाकृतिञ्चैव इत्येता ग्रहमूर्त्तयः ॥५॥

शनिश्चर का तलवार। राहु का मच्छ तथा केतु का झण्डी जैसा। इस प्रकार देवताओं का आकार बनावें ॥५॥

भास्कराङ्गा रक्तौ रक्तौ, श्वेतौ शुक्र निशाकरौ। हरितो ज्ञो गुरुःपीतः शनिः कृष्णस्तथैव च, राहुकेतु तथा धूम्रौ, कारयेच्च विचक्षणः ॥६॥

सूर्य तथा मंगल में लाल रंग, शुक्र और चन्द्रमा में सफेद रंग, बुध में हरा, बृहस्पति में पीला,

शनिश्चर में काला, राहु और केतु में धुवें जैसा रंग भरे। विद्वान् जन इस रीति से वेदी तैयार करें।

मण्डलादैशाने क्रमशः गणेश ओंकारं श्रीलक्ष्मीं ६४ योगिन्यः स्थापयेत्। पुनः ग्रहवेदी उत्तरतः षोडशकोष्ठरूपाः षोडशमातरः ईशाने घटं स्थापयेत्। ततो घटसमीपे दीपं मण्डलाद् दक्षिणे कृष्णसर्पञ्च स्थापयेत्।

नवग्रह वेदी से ईशान कोण में क्रम से गणेश, ओंकार श्री लक्ष्मी, ६४ योगिनी तथा वेदी से उत्तर में सोलह कोठे की गौर्यादि षोडशमातृ बनावें। ईशान कोण में फूल का आकार बनाकर उसके ऊपर अन्न धरें। उस अन्न के ऊपर जल का भरा कलश धरें। उसमें गंगा जल व आमकी टहनी डाल दें। फिर उस पर जल का करवा कलावा बांधकर रक्खें। करवे पर लाल कपड़े में लपेट कर या कलावा बांधकर नारियल धरें। उसके पास सतिये का आकार बनावें, उस पर

रोली के रंगे हुए चावल धरें, उन पर गणेश जी की स्थापना करें। निकट ही घी का दीवा जलावें। मण्डल से दक्षिण में सर्प बनावें। यह ग्रहों के स्थापना की विधि है ॥

अथ पूजन विधिः

(यजमानः पूर्वाभिमुखां उपविश्य)

यजमान पूर्व की ओर मुख करके तथा पाधा उत्तर को मुख करके बैठें। यजमान पूजन की सब सामग्री पर गंगाजल का छींटा लगावे [मंत्र]

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥

(स्वस्तिवाचनं कृत्वा)

पाधा यजमान आदि सब मनुष्यों के हाथ में चावल देकर नीचे लिखे मंत्र पढ़ें।

ॐ मतिकरणं भयहरणं गिरिजा शरणं

गणेशमभिवन्दे केदारेशनिवेशम् योगी-
शम् सर्वजगदीशम् ॥ सुमुखश्चैकदन्तश्च
कपिलो गजकर्णकः लम्बोदरश्च
विकटो विघ्ननाशो विनायकः । धूम्र-
केतुर्गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुया-
दपि । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे
निर्गमे तथा। संग्रामे संकटेचैव विघ्न-
स्तस्य न जायते । वक्रतुण्ड महाकाय
सूर्यकोटिसमप्रभ अविघ्नं कुरु मे देव!
सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ शुक्लांबरधरं
देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्न-
वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशांतये ॥
अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो
यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै
गणाधिपतयेनमः॥ हरिः ॐ गणानांत्वा
गणपति छं हवामहे प्रियाणांत्वा प्रिय
पति छं हवामहे निधीनांत्वा निधि

पति छं हवामहेव्वसोमम आहमजानि
गर्ब्भध मात्वमजासिगब्भधम् ॥१॥
स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः
पूषा विश्श्ववेदाः स्वस्ति न स्ताक्ष्यों-
अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु॥२॥
पयः पृथिव्याम्पयओषधीषुपयो दिव्यन्त
रिक्षेपयोधाः पयस्वतिः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥
विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो-
बिष्णोः स्यूरसि व्विष्णो र्ध्रुवोऽसि
वैष्णवमसिविष्णोवेत्वा ॥ अग्निर्द्देवता
व्वातो देवता सूर्य्योदेवता चन्द्रमादेवता
व्वसवो देवता रुद्रो देवतादित्त्या देवता
मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पति
र्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष छं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः
शान्तिः बनस्पतयः शान्तिः र्व्विश्वे
देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वं छं

शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥६॥ विश्श्वानि देव-सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥७॥ एतन्ते देवसवितर्यज्ञम्प्रा-हुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥८॥ मनोजूतिर्जु-षतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमन्द-धातु विश्वेदेवा सऽइह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रै-तेन यज्ञेन यजन्ते सर्व्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ओ३म् ॥९॥

(गणेशादिदेवानामुपरि अक्षतान् क्षिपेत्)
यजमान गणेशजी आदि सब देवताओं पर चावल छोड़े ।

(अथ प्रतिज्ञासंकल्पः)

यजमान हाथ में दक्षिणा, जल, चावल लेकर संकल्प करे ।

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्यों
नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमा-
याद्य श्रीब्रह्मणोन्हिद्वितीये प्रहरार्द्धे
श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमंवंतरे-
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे
जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्य्यावर्तांतर्गत-
ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफल-
प्राप्तिकामसिद्ध्यर्थं वर्तमानसंवत्सरे
अमुकायने भास्करे अमुकगोला-
वलम्बनेऽमुकपक्षेऽमुकतिथौऽअमुकवासरे-
ऽमुकगोत्रोऽहममुकशर्म्माहं सकल-
पापक्षयपूर्वकसकलमंगलप्राप्त्यै सर्वा-
रिष्टनिवारणार्थं सर्वत्र हर्षविजय
द्विपदे चतुष्पदे पशुबांधवकामः मम
सकलमनोरथानुरूपायुकीर्तियशोबल-
धनधान्य पुत्रपौत्रादिवृद्ध्यर्थं गणपत्या-
दिपंचलोकपालानां नवग्रहादिदेवता-
धिदेवताप्रत्यधिदेवतानामिन्द्रादिदश-

दिक्पालानामिष्टदेवताकुलदेवतासहि-
तानामन्येषामपि देवानामावाहनपूर्वकं
पूजनमहं करिष्ये ॥

(यजमानश्चतुर्ब्राह्मणवरणं कृत्वा)

यजमान चार ब्राह्मणों का वरण करे ।

४ अंगोछे, ४ पान, ४ सुपारी, ४ दक्षिणा, ४ कलावे की डोरी, चावल, रोली, फूल और ४ हार ये सब वस्तु पान के ऊपर रखकर यजमान अपने हाथ में लेकर संकल्प करे ॥

अद्य हेत्यादिऽमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्म्मा-
हं श्रीमहाकाली श्रीमहालक्ष्मी महा-
सरस्वती देवताप्रीत्यर्थं अस्मिन् श्री
दुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलप्राप्त्यर्थं
एभिर्गंधाक्षतपुष्पतांबूलपुङ्गीफलदक्षिणा-
वासोभिः अमुकगोत्रोत्पन्नान् सुपूजितान्
वेदसंख्यकान् युष्मान् ब्राह्मणान्
वृणे ॥

फिर यजमान पान की रोली से उन चार ब्राह्मणों के तिलक करे । इस मन्त्र द्वारा-

नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥१॥

(रक्षाबंधनम्) चारों के पौंहची बांधें।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥२॥

[तत्र आचार्यवरणं]

अंगोछे पर सब चीजें रखकर कराने वाले के वरण का संकल्प करे।

अद्यामुकगोत्रोऽहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलप्राप्त्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं एभिः गंधाक्षतपुष्पचंदनतांबूलवासोभिः अमुक गोत्र अमुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

---

* नोट—तिलक लगाकर पौंहची बांधते हुए एक एक ब्राह्मण को एक एक अंगोछा देता जावे।

पान पर रखी रोली से पाधा के तिलक करे ।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ पौंहची बांधें ।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

(वृतोस्मीति प्रतिवचनम् । विहितं कर्म कुरू)

यजमान पाधा से यह प्रार्थना करे कि जैसा शास्त्र में लिखा है उस प्रकार सारे कर्म कराइये ।

(करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

(पाधा) यजमान से कहे कि जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराऊंगा ।



अथ रक्षाविधानम्

(यवान् कुशान् तथा दूर्वामक्षतान्

दधिमिश्रितान् । ताम्बूलं गोमयञ्चैव कारयेत्ताम्रभाजने)

जौ, कुशा, दूब के नाल, दही, चावल, गऊ का गोबर, पान, फूल, रोली इन सबको तांबे के बर्तन में या मिट्टी की सरैयां में धरे, फिर यजमान उस पात्र को अपने दोनों हाथों में रक्खे। (पाधा) नीचे लिखे मन्त्र पढ़े।

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थ-जम्बूफलचारुभक्षणम् । उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर-पादपंकजम् ॥१॥ नमो नमः शाश्वत-शाँतिहेतवे क्षमादयापूरितचारुचेतसे। गजेन्द्ररूपाय गणेश्वराय पुंसः परस्य प्रथमाय सूनवे ॥२॥ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ स्थानक्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् धरणीगर्भसँभूतं शशि पुत्रं वृहस्पतिम् ।

दैत्याचार्य्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाबलम् । राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥ शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्च कथयाम्यहम् ॥ गर्गाचार्यं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम् पाराशरं तथा व्यासं सर्वशास्त्रविशारदम् । विद्याधिकाश्च ये केचित्केचिच्चैव तपोधिकाः । तान् सर्वान् प्रणिपत्याद्य यज्ञे रक्षंतु सर्वदा ॥८॥

यजमान ने जिन २ ब्राह्मणों का वरण किया है वे सब ब्राह्मण अपने २ हाथों में चावल लेकर नीचे लिखे मन्त्र के प्रमाण से छोड़ें ।

पूर्व में — अग्नि कोण में

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेयां गरुड़ध्वजः ।

दक्षिण में

याम्यां रक्षतु वाराहो

नैऋत्य में

नारसिंहस्तु नैऋते ॥

पश्चिम में

केशवो वारुणीं

वायव्य कोण में उत्तर में
रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः । उत्तरे श्री-
ईशान में
धरो रक्षेदैशाने तु गदाधरः ॥ शंखौं
वेदी के आगे वेदी के पीछे
रक्षतु यज्ञाग्रे यज्ञपृष्ठे च पद्मकम् ।
वेदी के बाईं तरफ वेदी के दाहिनी तरफ
वामपार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे च सुद-
र्शनम् ॥

आकाश में को पृथ्वी में
उपेन्द्रो रक्षतु ब्रह्माणमाचार्यं पातु
वामनः। अच्युतः पातु ऋग्वेदं
यजुर्वेदमधोक्षजः ॥ कृष्णो रक्षतु
सामानि अथर्वाणं तु माधवः । यजमानं
सपत्नीकं पुण्डरीकाक्षश्च रक्षतु ॥

फिर कुटुम्बसहित यजमान के ऊपर चावल छोड़े ।

भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे
स्वस्ति वाचयन्तो ब्रुवन्तु स्वस्तिताम् ।
ओं स्वस्तिताम्, इसको तीन वार कहे ॥

ॐ स्वस्तिनइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु ॥१॥ भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे पुण्याहं वाचयन्तो ब्रुवन्तु पुण्याहम् ॥२॥

(ॐ पुण्याहम्) इसको तीन बार कहे।

ॐ पुनंतु माँ देवजनाः पुनंतु मनसा धिया। पुनंतु विश्वाभूतानी जातवेदः पुनीहि माम्। भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे कल्याणं वाचयन्तो ब्रुवन्तु कल्याणम् ॥३॥

(ॐ कल्याणम्) इसको तीन बार कहे

यथेमाम् वाचं कल्याणीं मा वदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राया चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमंतु ॥१॥

भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्य गृहे
ऋद्धिं वाचयन्तो ब्रुवन्तु ॐ ऋद्धि-
ताम् ॥३॥ सत्रय ऋद्धिरस्य गन्म
ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या
ऽध्यारुहामा विदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥१
भो ब्राह्मणाः अस्य यजमानस्या गृहे
पुष्टिं वाचयंतो ब्रुवन्तु पुष्टिताम् ॥३॥
रायश्चमे विभुच मे प्रभुच मे पूर्णञ्च मे
पूर्णतरञ्चमे कुयंचमे क्षितिञ्च मेऽन्नं च
मे तुञ्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ रक्षो
हणां बलगहनं वैष्णवी मुद महतँ वलग
मुत्किरामियँ मिनिष्ट्यो समात्ये निच-
खाने दमहतँ वलग-मुत्किरामिय
मे सबन्धुर्मम सबन्धुर्निचखाने दमहत
वलगमुत्किरामियं सजातो मम सजाते
निचखाने दमहतं वलगमुत्किरामि
यं समानो मम समानो निचखाने
दमहतं वलगमुत्किरामियम्। (आचा

पूर्वमेव सर्षपान् गृहीत्वा मन्त्रमुच्चारयेत्)

संस्कार कराने वाला आचार्य भी अपने हाथ में सरसों के दाने लेकर यह मन्त्र पढ़ कर यजमान के ऊपर छोड़दें ।

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणा हिरण्य छं शतानीकाय सुमनस्य मानाः तन्म आ बध्नामि शतशारदाऽऽयुष्मांच दृष्टिर्य यथासम् ॥

(यवान् कुशान्तथा दूर्वान् होमकुण्डे क्षिपेत्)

जौ, कुशा, दूब के नाल और गोबर, उस पात्र में से निकाल कर हवन की वेदी के बीच में रखदे । (पाधा) उसी पात्र की रोली में से यजमान के तिलक करें । (मन्त्रः)

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः । तिलकंते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥१॥

पौंची बांधे ये मन्त्र पढ़े ॥
येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः
तेनत्वां प्रतिबन्धामि रक्षेन्माचल-
माचल ॥
(गणेशाद्यावाहनं पूजनं च कृत्वा) यजमान
गणेशजी आदि से लेकर सब देवताओं का
आवाहन पूजन करे ॥
(गणेशावाहानमक्षतान् गृहीत्वा)
यजमान के हाथ में चावल दे, पाधा यह मन्त्र पढ़े
ॐ विनायकं महत्पुण्यं सर्वदेवनम-
स्कृतम् । सर्वविघ्नहरं गौरी पुत्रमावा-
हयाम्यहम् ॥
गणेश जी पर चावल छोड़ देवे (पूजनम्
कृत्वा) पूजन करे । (मन्त्रः)
भो गणपतिदैवत ! अत्र मंडले इहा-
गच्छ, इह तिष्ठ, मम यजमानस्य
गृहे शुभं कल्याणं कुरु । गणपतये
नमः । पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनम्
स्नानं, वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, गंधाक्षतान्

पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं तांबूलं पूगीफलं दक्षिणाञ्च समर्पयामि नमो नमः ॥

पहले गणेशजी को स्नान करावे अर्थात तीन आचमनी जलकी भरके गणेशजी पर छोड़े या एक पात्र में तीन आचमनी जल की भरके छोड़े, फिर रोली के छींटे लगावे। चावल, फूल, धूप, दीप, मीठा, वस्त्र, यज्ञोपवीत, पान, सुपारी, सब सामग्री चढ़ावे [प्रार्थना] हाथ जोड़े। पाधा नीचे लिखा मन्त्र पढ़ें–

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो। गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥

[पंचलोकपालपूजनम्]

गणेश जी के पास ही इनका पूजन करे।

(ब्रह्मावाहनम्)

ब्रह्मा जी का आवाहन करे। (मन्त्रः)

ब्रह्माणं शिरसा नित्यं अष्टनेत्रं चतु-
र्मुखम् । गायत्रीसहितं देवं ब्रह्म
आवाहयाम्यहम् ॥१॥

जैसे गणेश जी पर चढ़ाई है इसी प्रका
ब्रह्माजी पर चावल छोड़े, पूजन करे और स
सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़कर प्रार्थन
करे (मन्त्रः)

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत
सुरुचो वेन आवः। सबुध्न्याऽउपमा-
ऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च
विवः ॥१॥

(विष्णोरावाहनम्)❀

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्
रुक्मिणीसहितँ देवँ विष्णुमावाहया-
म्यहम् ॥ २ ॥

पूजन कर सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े । मंत्र

नोट-जहां अवाहनम् आवे वहां यजमान के हाथमें चावल दे

नोट—आवाहन का अर्थ बुलाने का है।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पा छं सुरे ॥२॥

(शिवस्यावाहम्)

ॐ शिवं शंकरमीशानं द्वादशार्द्धं: त्रिलोचनम्। उमया सहितं देवम् शिवमावाहयाम्यहम् ॥३॥

पूजन करे तथा हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। वाहुभ्यामुतते नमः ॥३॥

(ॐ कारावाहनम्)

आवाहयाम्यहँ देवं ॐकारं परमेश्वरम्। प्रेणवँ त्रिगुणाधारमप्रमेयं सनातनम् ॥४

पूजन करे फिर हाथ जोड़े

ॐकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोत्तदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥४॥

(लक्ष्म्यावाहनम्)

क्षीरसागरसम्भूतां शरीरे विष्णुमा-

श्रिताम् । यजमानहितार्थाय लक्ष्मी-
मावाहयाम्यहम् ॥५॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मइषाण सर्वलोकम्म-ऽइषाण ॥५॥

(पुण्यावाहनम्)

सर्वविघ्नहरं देवं सर्वदेवेषु पूजितम् । भारतीं ब्रह्मणः शक्तिं पुण्यमावाह-याम्यहम् ॥६॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े

ॐपुनन्तुमा देवाजनाःपुनन्तु मनसा धिपः । पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम् ॥६॥

(रक्तपुष्पाक्षतैः मध्ये सूर्य्यावाहनम्)

दिवाकरं सहस्रांशुं ब्रह्माद्यैश्च सुरेर्नुतम् । लोकनाथं जगच्चक्षुः सूर्य्य-मावाहयाम्यहम् ॥७॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥

(आग्नेय्यां श्वेतपुष्पाक्षतैः चन्द्रावाहनम्)

हिमरश्मिं निशानाथं तारिकापति- मुत्तमम् । औषधिनां च राजानम् चन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े । (मन्त्र)

ॐ इमं देवाऽअसपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान- राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशएषवोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥

(याम्यां रक्तपुष्पाक्षतैः भौममावाहनम्)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्तेजःसमप्रभं । कुमारं शक्तिहस्तांच भौममावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् । अपा ७ं रेता ७ं सिजिन्वति ।

(ऐशान्यां पीतपुष्पाक्षतै बुधस्यावाहनम्)

बुधं बुद्धिप्रदातारं सोमवंशविवर्धनँ यजमान- हितार्थाय बुधमावाहया-म्यहम् ॥४॥

पूजन करे और हाथ जोड़े ।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहीत्व-मिष्टापूर्ते स ७ं सृजेथा मयञ्च । अ-स्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदतः ॥

(उत्तरे पीतपुष्पाक्षतैः बृहस्पत्यावाहनम्)

बुद्धिश्रेष्ठम् गिरः पुत्रं देवानां च पु-रोहितम् । शक्रस्य मंत्रिणाँ श्रेष्ठं गुरु मावाहयाम्यहम् ॥५॥

पूजन करे और हाथ जोड़े

ॐ बृहस्पतेऽ अतियदर्यो ऽ अर्हा-

द्यु मद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दी दयच्छवस ऽ ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहिचित्रम् ॥५॥

(पूर्वे श्वेतपुष्पाक्षतैः शुक्रस्यावाहनम्)

प्रविश्य जठरे जंतोर्निष्क्रान्तः पुनरेवयः । आचार्यमसुरादीनाम् शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥६॥

पूजन करे और हाथ जोड़े । मन्त्र--

ॐ अन्नात् परिस्रु तो रसम्ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयो मृतंमधुः ॥

(पश्चिमे कृष्णपुष्पाक्षतैः शनेरावाहनम्)

प्रदीप्तवन्हिवर्णाभं भिन्नाञ्जनसमप्रभम् । छायामार्तण्डसंभूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे और हाथ जोड़े ॥ मन्त्रः-

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु

पीतये । शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥

(नैऋत्यां धूम्रपुष्पाक्षतैः राहोरावाहनम्)

चक्रेण छिन्नमूर्द्धानं विष्णुना च निरीक्षितम् । सैंहिकेयँ महाकायं राहुमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदा-वृधः सखा । कया शचिष्ठया वृताः ॥८॥

(वायव्यांधूम्रपुष्पाक्षतैः केतोरावाहनम्)

ब्रह्मणः कुलसंभूतं विष्णुलोकेभयावहम् । शिखिनन्तु महाकायम् केतुमावाहयाम्यहम् ॥६॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥ (मन्त्रः)

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥६॥

अथाधिदेवता आवाहनं पूजनम्

--

सूर्य से लेकर केतु तक जिनका पूजन किया है उनको दाहिनी २ ओर अधिदेवताओं का फूल चावल लेकर आवाहन करे ।

(मध्ये रविदक्षिणे श्वेतपुष्पाक्षतैः शिवस्यावाहनम्)

त्रिनेत्रं भैरवाकारं पूजिते च सुरासुरैः
उत्पत्तिस्थितिकर्तारं शंभुमावाहयाम्यहम्

पूजन कर हाथ जोड़े (मन्त्रः)

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

अग्निस्यांचन्द्रदक्षिणे रक्तपुष्पाक्षतैः पार्वत्यावाहनम्

हिमपर्वतसंभूतां शरीरे शंभुमाश्रितां
यजमानहितार्थाय उमामावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े

ॐ अम्बे अंबिके अम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्यःश्वकः सुभ-

द्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

याम्यां भोमदक्षिणे पीतपुष्पाक्षतैः स्कंदस्यावाहनम्

सुरसेनापतिं देवं तारकस्य विनाशनम् ।
पार्वतीनन्दनं श्रेष्ठं स्कन्दमावाहयाम्य-
हम् ।

पूजन कर हाथ जोड़े ॥ मन्त्र

ॐ यदक्रन्दः प्रथमंजायमानः उद्यन्त्स-
मुद्रादुतवा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा
हरिणस्य बाहूउपस्तुत्यम्महि जातन्ते
अर्वन् ॥

ऐशान्यां बुधदक्षिणे पीतपुष्पाक्षतैः विष्णोरावाहनम्

शंखचक्रगदापाणिमसुरारिं जगत्प्रभुं ।
संसारतारणं देवं विष्णुमावाहयाम्य
हम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्थो
विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्ण-
वमसि विष्णवेत्वा ॥

उत्तरे गुरुदक्षिणे श्वेतपुष्पाक्षतैः ब्रह्मणोऽऽवाहनम्

मुखांतेजःसमं जाता अग्निर्देवास्तुब्राह्मणः। जगतसृष्टिं सुरादीनां ब्रह्मआवाहयाम्य-हम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े। (मन्त्रः)

ॐ आब्रह्मन् ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसी जायतां मा राष्ट्रे राजन्यः शूर इष-व्येति व्याधि महारथो जायतां दोग्धी धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः समेयो युवास्य यजमा-नस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमी नः कल्पंताम् ॥

पूर्वे शुक्रस्य दक्षिणे पीतपुष्पाक्षतैः इन्द्रस्यावाहनम्

देवनाथं सहस्राक्षं शक्तिहस्तं शची-पतिम्। पर्वतारिं महाबाहुं शक्रमावा-हयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिव वृत्रहा शूर विद्वान् जहि शत्रून्न पमृधोनुदस्वास्था भयम् कृणु हि व्विश्वतोनः ॥

पश्चिमेशाने दक्षिणे कृष्णपुष्पाक्षतैः यमस्यावाहनम्

सूर्य्यपुत्रं महाबाहुं प्रेतेशं दण्ड-पाणिनम् । जन्तूनाँ त्रासकर्तारम् यममावाहयाम्यहम् ॥

पूजन और प्रार्थना करे ॥ (मन्त्रः)

ॐ आसियमो अस्यादित्यो अर्वन्न सत्रितो गुह्येन ब्रतेन । असि सोमेन संमया विपृक्तआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥

नैऋत्याराहुदक्षिणे धूम्रपुष्पाक्षतैः कालस्यावाहनम्

यमं च महिषारूढं दण्डपाणिं महा बलम् । कृष्णाक्षं कृष्णवर्णं च काल मावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे और हाथ जोड़े ।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरग्म तसमो-षधीभिरोषधीः ॥

(वायव्यां केतुदक्षिणे रक्तपुष्पाक्षतैः चित्रगुप्तावाहनम्)

धर्मराजहितं भूत्यं धर्माधर्मविचार-कम् । अप्रत्यक्षविदं चित्रगुप्तमावा-हयाम्यहम् ॥

पूजन करे और हाथ जोड़े । मन्त्र--

ॐ इन्धानास्त्वा शत छं हिमाद्यु म-न्त छं समिधिमहि । वयांस्वन्नो व्वयस्कृत छं सहस्वन्नो सहस्कृत छं अग्ने सपत्न दम्भनमदब्धासो अदा-भ्यं चित्रावसो स्वस्तिते पारमशीयः ॥

अथ प्रत्यधिदेवतावाहनं पूजनम्

अब इसी तरह से प्रत्यधि देवताओं का फूल, चावल से आवाहन तथा पूजन करे। सूर्य से

लेकर केतु तक इनके बाईं तरफ)

(मध्येसूर्यस्य वामे रक्तपुष्पाक्षतैः अग्न्यावाहनम्)

मुखं समस्तदेवानां खाण्डवारण्य-
दाहकम् । पूजितं सर्वयज्ञेषु ह्यग्नि-
मावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे और हाथ जोड़े ।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देव-
मृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥

अग्नेयां च चन्द्रस्य वामश्वेतपुष्पाक्षतैःआपमावाहनम्

त्वमायुः सर्वसिद्धानां देवदानवरक्षसां ।
शुद्धिकृत्सर्ववस्तूनां आप आवाहयाम्य-
हम् ॥

पूजन करे हाथ जोड़े (मन्त्रः)

आपो अस्मान् मातरः शुन्धयंतु घृतेन
नोघृतय्वः पुनन्तु । विश्व छं हिरिचिप्रं
प्रवहति देवो रुदिदाभ्यः शुचिरा-
पूतराभिः ॥

(दक्षिणे भौम रक्तपुष्पाक्षतैः पृथिव्यावाहनम्)

विष्णुना लोकरूपेण जगतां पतिना

धृताम् । क्षमायुक्तां धरित्रीं च पृथ्वी मावाहयाम्यहम् ॥

पूजन और प्रार्थना करे ॥ (मन्त्रः)

ॐ स्योना पृथिवीनो भवान्नृक्षरानि-वेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः ॐ भूरसि भूमिरसिऽदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं यच्छ पृथिवींदृंहपृथवी माहि ँ सिः ॥

ईशान्ये बुधस्य वामेपीतपुष्पाक्षतैः विष्णोरावाहनम्

श्रीधरं च गदापाणिमसुरारिं जगत्-प्रभुम् । संसारतारणं देवं विष्णुमावाह-याम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ॥

ॐ इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्यपा ँ सुरे ।

(उत्तरे गुरुवामे पीतपुष्पाक्षतैः इन्द्रावाहनम्)

शतक्रतुं महापुण्यं देवारिं बलनाश-नम् । वज्रपाणिं महावीर्यं इन्द्रमा-

वाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ महाइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शयराच्छतु हंतु पामानः पयोस्मान् द्वेष्टि उपयाम गृहीतोसि महेन्द्रायत्वशते योनिमहेन्द्रायत्वा ॥

ॐ शयोषा इन्द्रसगणो मरुद्भिः । सोमं पिब वृत्रहा शुद्ररविद्वान् ॥ जहि शत्रुन्न्पमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतोनः ॥

(पूर्वे शुक्रस्य वामे पीतपुष्पाच्छतैः इन्द्रस्यावाहनम्)

इन्द्रपत्नीं महापुण्यां देवेन्द्रपरमप्रियां । सर्वसिद्धिकरेन्द्राणीं देवीमावाहयाम्यहम् ।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े

ॐ इन्द्रं देवी विशो मरुतो नुवर्तमानो भवन्त्यर्थेन्द्रदेवी विविशो मानुषीश्चानुवर्तमानो भवतु ॥

(पश्चिमेशानेर्वामे श्वेतपुष्पाच्छतैः विधेरावाहनम्)

प्रजापतिं सुरश्रेष्ठं ब्रह्माणं कमलो-
द्भवम्। संसारसृष्टिकर्त्तारं विधिमा-
वाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे तथा हाथ जोड़े ॥ मन्त्र

ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि
परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो
अस्तु वयं छं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

नैऋत्यां राहोर्वामे कृष्णपुष्पाक्षतैः शेषस्यावाहनम्

भुजङ्गमंडलाधीशं धरिणी धरणाक्षमां
पातालनायकं देवं शेषमावाहयाम्य-
हम्।

पूजन करे फिर हाथ जोड़े। (मन्त्रः)

ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवी
मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः
सर्प्पेभ्यो नमः ॥

(वायव्यां केतोर्वामे श्वेतपुष्पाक्षतैः ब्रह्मावाहनम्)

पिताहं सर्वदेवानां परब्रह्मस्वरू-
पिणः। व्यक्ताव्यक्तगुणं रूपं ब्रह्म

आवाहयाम्यहम् ॥

पूजन करे फिर हाथ जोड़े

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि-
सीमतः सुरुचोवेन आवः । सबुध्न्या
उपमा अस्यविष्ठाः शतश्च योनि-
मसतश्चविवः ।

दशदिग्पालानामावाहनंपूजनम्

नवग्रह की जो वेदी है उस के चारों तरफ दसों दिशाओं में दस दिग्पालों का पूर्व से दक्षिण को आवाहन पूजन करे ॥

(अक्षतान् गृहीत्वा इन्द्रस्यावाहनम्)

ऐरावतसमारूढं वज्रपाणिं महाबलम् ।
आश्रितं दिशि पूर्वस्यां इन्द्रमावा-
हयाम्यहम् ॥

पूर्व में चावल छोड़े पूजन कर फिर हाथ जोड़े ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ
हवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्र ꣳ व्हयामि
शक्रम्पुरुहूतमिंद्रꣳ स्वस्तिनो मघ-

वाधात्विन्द्रः ॥

इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ (अक्षतैः अग्नेरावाहनम्)

छागपृष्ठसमारूढम् शक्तिहस्तं महाबलम् । आश्रितं दिशि चाग्नेय्यां अग्निमावाहयाम्यहम् ॥

अग्नि कोण में चावल छोड़ कर पूजन करे ॥

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवांऽआसादयादिह ॥

अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ (अक्षतैः यमस्यावाहनम्)

महिषपृष्ठसमारूढम् दण्डहस्तं महाबलम् । आश्रितं दिशि याम्यां च यममावाहयाम्यम् ॥

दक्षिण में चावल छोड़ कर पूजन करे ॥

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे । देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः स छं पृशस्पाहि अर्चिरसि सोर्चिरसि तपोसि ॥

यम इहागच्छ इह तिष्ठ (अक्षतैः नैर्ऋत्यावाहनम्)

महाप्रेतसमारुढ खड्गहस्तम्महावलम् ।
आश्रितं दिशि नैर्ऋत्यां
नैर्ऋत्यमावाहयाम्यहम् ॥

नैर्ऋत्य कोण में चावल छोड़ पूजन करे ॥

ॐ एष ते नैर्ऋतेर्भागस्त्वं जुषस्व स्वाहा अग्नि नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणा सद्भ्यः स्वाहा विश्वदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भयः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वामरुन्नेत्रेभ्यो वाम-देवेभ्योः उत्तरा सद्भ्यः स्वाहा सोम नेत्रेभ्यो देवेभ्यः उपरिस्विद्भ्यो दुवः स्वर्तस्तेभ्यः स्वाहा ॥

नैर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ठ (अक्षतैःवरूणावाहनम्)

प्रेतपृष्ठसमारूढम् खड्गहस्तं महा-बलं । वारुण्यां दिशमाश्रित्य वरुण-मावाहयाम्यहम् ॥

पश्चिम में चावल छोड़कर पूजन करे। (मन्त्रः)

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसद - न्यसी वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद् ॥

वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ (अक्षतैःवायोरावाहनम्)

मृगपृष्ठसमारूढम् खड्गहस्तं महाबलं। आश्रितं दिशिवायव्यां वायुमावाहयाम्यु- हम् ॥

वायव्य कोण में चावल छोड़ पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ वातो वामनो वा गंधर्वा सप्त विंशतिः ते अग्ने अश्वमयञ्जस्ते अस्मिन् जवमादधुः ॥

वायो इहागच्छ इह तिष्ठ (अक्षतैःकुबेरावाहनम्)

मेषपृष्ठसमारूढं गदाहस्तं महबलम्। उदीचींदिशमाश्रित्य कुवेरमावाहय- म्यहम् ॥

उत्तर में चावल छोड़ पूजन कर हाथ जोड़े।

ॐ कुविदंगयवमन्तोयवंचिद्यथा दान्त्य-
नुपूर्वं विपय इहेहैषां कृणुहि भोजनानि
ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥

कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

(अक्षतैः शिवस्यावाहनम्)

वृषपृष्ठसमारूढम् शूलहस्तं महाबलम् ।
ऐशानीं दिशमाश्रित्य शिवमावाहया-
म्यहम् ॥

ईशान कोण में पूजन करे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ ईशावास्यमिद ꣳ सर्वं यत्किंच
जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा
मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ । (अक्षतैः अनन्तावाहनम्)

नागपृष्ठसमारूढम् शूलहस्तं महा-
बलम् । पातालदिशमाश्रित्य अनन-
न्तमावाहयाम्यहम् ॥

पश्चिम नैर्ऋत के बीच में चावल छोड़ पूजन करे ।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी-
मनु । ये अन्तरिक्षे दिवितेभ्यः
सर्पेभ्यो नमः ॥ अनन्तदेवा इहागच्छ इह तिष्ठ ॥

(अक्षतैः ब्रह्मावाहनम्)

हंसपृष्ठसमारूढम् श्रुवहस्तं महा-
बलम् । ब्रह्मणो दिशमाश्रित्य ब्रह्म
आवाहयाम्यहम् ॥

पूर्व और ईशान के बीच में चावल छोड़ पूजन करे ।

ॐ ब्रह्म यज्ञानम् प्रथमम्पुरस्ता-
द्विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः । सबु-
ध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च
योनिमसतश्चव्विवः ॥

ब्रह्म इहागच्छ इह तिष्ठ ।

(पूर्वे अष्टवसु प्रपूजयेत्)

पूर्व में अष्ट वसु का पूजन कर सब सामग्री चढावे ।

(दक्षिणे एकादशरुद्रपूजनम् ।

दक्षिण में ग्यारह जो शिव हैं उनका पूजन कर
सब सामग्री चढावे ।

पश्चिमे द्वादशादित्यपूजनम् ।

पश्चिम में बारह जो सूर्य्य नारायण हैं उनका पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

(विश्वेदेवास्तथोत्तरे)

विश्वेदेवा का उत्तर में पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे ।

(वामपार्श्वे शेषं द्विपदमाह्वयेत्)

इनसे बाईं तरफ सर्प का आवाहन करे ।

आवाहयामि देवेशं पातालतलवासिनम् । सहस्रशिरसं नागं फणी मणि-विराजितम् ॥ कर्पूरविशदम् नागं नागराजमहाबलम् । परोपकारनिरतमनंतं विष्णुवाहनम् ॥ आगच्छ नागराज त्वं दोत्रेस्मिन् सन्निधौ भव ॥

सर्प के ऊपर चावल छोड़ पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े ।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ (अश्विन्यादिसप्त

नक्षत्राणि स्थापयेत्पूर्ववत् क्रमात्)
अश्विनी से सात नक्षत्रों का पूर्व में स्थापन करे
(पुष्यादिसप्तनक्षत्राणि दक्षिणे स्थापयेत्)
पुष्य से सात नक्षत्र दक्षिण में स्थापन करे ॥
(स्वात्यादिसप्तनक्षत्राणि पश्चिमे स्थापयेत्) स्वाति से लेकर सात नक्षत्रों को पश्चिम में स्थापन करे ।
(अभिजिदादिसप्तनक्षत्राणि उत्तरे स्थापयेत्) अभिजित से सात नक्षत्रों को उत्तर दिशा में स्थापन करे ।
(अश्विन्यादिनक्षत्राणां गंधादिनी पूजनं कुर्यात्) अश्विनी नक्षत्र से लेकर सब नक्षत्रों का रोली से पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे
(नैर्ऋत्यां नवपितृकं पूजयेत्)
नैर्ऋत्य में नव पितरों का पूजन करे ॥
(सागराः सप्त वायव्ये पूज्याः)
सात समुद्रों का वायव्य कोण में पूजन करे ॥

(उत्तरे मरुतः पूज्या सप्तऋषीन्स्था-
पयेत्)

उत्तर में मरुत और वहीं सात मुनियों का स्थापन कर पूजन करे, हाथ जोड़े।

कश्यपोऽत्रीभरद्वाज विश्वामित्रौऽथगोत्तमः। यमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते मुनयः स्मृताः॥१॥ (एवं प्रकारेण विष्कुम्भादियोगाः स्थापयेत्)

इसी तरह विष्कुम्भ से सात २ योगों का चारों दिशा में स्थापन कर पूजन करे॥

(मेषादिद्वादशराशिभ्यो नमः)

इसी प्रकार मेष से तीन तीन राशियों का चारों दिशाओं में स्थापना कर पूजन करे॥

(बवादिकरणेभ्यो नमः)

इसी प्रकार बवादि तीन तीन करणों का चारों दिशाओं में स्थापन कर पूजन करे॥

(उत्तरे ध्रुवाय नमः) उत्तर में ध्रुवजी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे॥

(दक्षिणे अगस्त्याय नमः) दक्षिण में अगस्त्य जी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे॥

(अथ कलशस्थापनम्)

अब कलश की पूजा करे ॥

(भूमिस्पर्शनम्) कलशे के नीचे भूमि पर हाथ लगावे ॥ मन्त्र ॥

ॐ मही द्यौः पृथिवी चन इमं यज्ञं मिमिक्षताम् पिपृतां नो भरीमभिः ॥

(यवान् क्षिपेत्) कलशे के नीचे जौ छोड़े ।

ॐ ओषधयः समवदं तसोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त्व ॐराजन् पारयामसि [पूर्वादिचतुर्दिक्षु कलशे चतुर्वेदान् सम्पूज्य]

कलश के चारों ओर चारों दिशाओं में चारों वेदों का पूजन करे ॥

[ऋग्वेदमावाह्य] ऋग्वेद का पूर्व में ॥

ॐ अग्निमीले पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम् ॥

(यजुर्वेदमावाह्य) यजुर्वेद का दक्षिण की ओर

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो-

वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणः आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा वस्तेन ईशतमाघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमा-नस्य पशून्पाहि ॥

[सामवेदमावाह्य]

सामवेद का पश्चिम में

ॐ अग्नआ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि ॥

(अथर्ववेदमावाह्य)

अथर्ववेद का उत्तर दिशा में पूजन करे । मन्त्र

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शन्य्योरभिस्रवन्तु नः ॥

(चन्दनादिलेपनम्)

घड़े पर चन्दन आदि केशर लगावे ॥मन्त्र॥

ॐ आजिघ्रम् कलशं मह्यात् वा विशं त्विंदिवः पुन रुर्जा निवर्त्तस्वसानः

सहस्र धूद्भ्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥ (मंत्रेण जलदानम्)

इस मन्त्र से गङ्गाजल गेरे ॥ (मन्त्रः)

ॐ वरुण स्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्न्यसि वरुणस्यऽऋत सदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद् ॥

[अश्वत्थपत्रप्रक्षेपः] फिर पीपल के पत्ते आदि ❀ पंच पल्लव गेरे ॥ मन्त्रः ॥

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णोवो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलास-थयत्सनवथ पुरुषम् ॥

(पुनर्दूर्वाप्रक्षेपः) फिर दूब के नाल गेरे ।

ॐ कांडात्कांडात्प्ररोहंति पुरुषः पुरुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेनच ॥ (कुशपत्राक्षेपणम्)

कुशा का पवित्रा गेरे । और यह मन्त्र पढ़े ।

---

*नोट—पीपल; बड़, गूलर, आम, और जामन के पत्ते

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रशवः उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिर्भिः। तस्य ते पवित्र पते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥ (पूगीफलम्) सुपारी गेरे ॥ मन्त्र ॥

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। वृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुंचत्व ग्वं हसः ॥

(ताम्बूलम्) पान गेरे ये मन्त्र पढ़े।

प्राणाय स्वाहा अपानाय ॥

(अथाम्र पल्लवम्) आम की टहनी गेरे।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मान यतिकश्चन स सस्त्यः श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

(पुष्पाणि तूष्णीं प्रक्षिपेत्)

फूल चुपके से छोड़ दे।

(दक्षिणा द्रव्यं क्षिपेत्) दक्षिणा गेरे

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमा कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ (*सर्वौषधीः क्षिपेत्)

सर्वौषधी या सितावर गेरे, (मन्त्रः)

ॐ या औषधीयः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा । मनै नुब भ्रूणामह छं शतं धामानि सप्त च ॥

(परिधान्याक्षिपेत्) सतनजा गेरे ।

ॐ तूश्च सिद्धाथकुष्टरजनीद्वयं लोध्रमुस्ता लामज्जशैलफलनी मुरवासिमुक्का इतिस्मृत्मुक्का । धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्धामनु प्रसितेमायुषेधान्दे वौवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण

*नोट—मुरा, मांसी, बच, कूठ, शिलाजीत, हल्दी दारुहल्दी, सौंठ चम्पा, मोथा ये ना मिले तो हल्दी की गांठ गेरे ।

पाणिना चक्षुषोत्वा महीर्नापयोसि

(पुनः समुद्रजलदानम्)

फिर समुद्र का जल गेरे और यह मन्त्र पढ़े :-

ॐ समुद्रायत्वा वाताय स्वाहा सरितायत्वा वाताय स्वाहा अनाधृष्पायत्वा वाताय स्वाहा समुद्रायत्वा वाताय स्वाहा ॥

(धूपं) धूप दे। (मन्त्रः)

ॐ धूरसि धूर्व्वन्तं धूर्व्व योस्मान् धूर्वयां वयं धूर्वामः। देवानामसि वन्हि तम ὕ सस्नितमम्यप्रिपतम-जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

(दीपं दद्यात्) दीपक दिखावे। (मन्त्रः)

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्य्यो ज्योतिः सूर्य्य स्वाहा। अग्नि-र्वर्च्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। सूर्य्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः

सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ।

(नैवेद्य दद्यात्) मीठा चढ़ावे । (मन्त्रः)

ॐ अन्नपतेन्नस्य नीदेह्य नमीवस्य शुष्मिणः प्रदातारं तारिष ऊर्ज्जंवी धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥ (गन्धम्)

इस मन्त्र से रोली डाले । (मंत्रः)

ॐ त्वांगन्धर्वा ऽ अखनोस्त्वामि-न्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ।

❀ इस मंत्र से पंचरत्न गेरे । (मंत्रः)

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या-न्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ।

इस मंत्र से सप्तमृत्तिका डाले ❀ (मन्त्र)

ॐ स्योना पृथिवीनो भवान्वृक्ष रानिवेशनी । यच्छानः शर्मशप्रथाः ।

❀ नोट—सुवर्ण, हीरा, मोती, पद्मराग, नीलम ये नहीं मिलें तो सोना ही डालना चाहिये ।

❀ नोट—घोड़े के नीचे की, हाथी के नीचे की, वम्बी की, नदी संगम की, कुण्ड की, राजद्वार की, गौशाला की, अगर ये ना मिलें तो गङ्गारज जरूर डालनी चाहिये ।

(वस्त्रं दद्यात्) कपड़ा चढ़ावे ॥ (मन्त्रः)

ॐ पूर्णादर्वी परापतसुपूर्णा पुनरापतः वस्तेव विक्रीणावहा इष मूर्जं छं शतक्रतो॥ (प्रतिष्ठां कुर्य्यात्) चावल छोड़े

ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञछं समिमन्दधातु विश्वेदेवास ऽ इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ ॥ (श्रीफल पुष्पमालाम्)

नारीयल व फूलों की माला पहिनावे ॥ (मन्त्रः)

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्ताम् । इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्म इषाण (तंडुल परिपूरितपात्रं कलशोपरिस्थापयेत) ।

घड़े के ऊपर एक कटोरे में चावल भर कर धरे। मंत्रः

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्तव विक्रीणावहा ऽ इष मूज छं शत क्रतो ॥

(प्रार्थना) अत्र हाथ जोड़े। (मन्त्रः)

ॐ गंगा द्यौः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्रास्सरितः सराँसि जलदानदाः। आयातु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः। कलशस्य मुखे विष्णुः कन्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागराः सप्तसप्तद्वीपा वसुंधरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः। अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशंतु समाश्रिताः। देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।

उत्पन्नोसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णु नास्वयम् । त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवास्सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयितिष्ठति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः । आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः । त्वयितिष्ठन्ति सर्वेपि यन्मे कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्त्तुमीहे जलोद्भव । सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ब्रह्मणो निर्मितैः तोयै मंत्रैश्चाप्यमृतोपमैः । प्रार्थयामि च तं कुम्भं वांछितार्थं प्रयच्छ मे ॥

(गौर्य्यादिषोड़श मातृपूजनम्)

पार्वती से लेकर सोलह माताओं का पूजन करे ।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा

स्वाहा मातरो लोकमातरः । हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मदेवी त्वया सह आदौ विनायकः पूज्य अन्ते च कुलमातरः (अथ यद्दे्वनिमित्तको होमस्तत् पूजनम्) जिस देवता के निमित्त हवन हो उस देवता का पूजन करे। दुर्गा का आवाहन करे। (मन्त्रः)

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥

दुर्गा की पुस्तक का पूजन कर दक्षिणा नारियल सब सामग्री चढावे फिर हाथ जोड़े।

ॐ दुर्गेस्मृता हरसिभीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता (स्रुव पूजनम्)
स्रुवे का पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़े।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ता द्वि-सीमतः सुरुचो व्वेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्चव्विवः ॥

अथ कुशंडिकाकरणाम्

फिर पाधा वेदी का संस्कार करावे ।

(ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करा भस्मादि रहिताम्) पाधा वेदी पर देखले कुछ तृणादि अशुद्ध वस्तु न हो ॥

(हस्तमात्रपरिमितां चतुरस्त्रभूमि कुशैः परिसमूह्य) एक हाथभर चकोर वेदी पर कुशा से तीन बार साफ करे ।

(तान्कुशान् ईशान्यां दिशि त्यजेत्) उन कुशाओं को ईशान दिशा में रख दे ।

(गोमयोदकेनोपलिप्य)

वेदी पर गौ के गोबर से लीपे।

(स्त्रुव मूलेन प्रागग्र प्रादेशमात्रमुत्त-

रोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य) स्रुवे की जड़ से पूर्व को सिरा कर बांये हाथ का अंगूठा और उसके पास की उंगली को वेदी पर फैलाकर दक्षिण से उत्तर को तीन लकीर खींचे।

(उल्लेखन क्रमेण नामिकांगुष्ठाभ्याँ मृदमुद्धृत्य) कन की उंगली के धोरे की उंगली और अंगूठे से वेदी के बीच की मिट्टी उठाकर तीन बार ऊपर को उछाले।

(जलेनाभ्युक्ष्य) फिर जलका छींटा लगावे

(नूतनकांस्यपात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात्) नवीन कांसी के पात्र में या सकोरे में अग्नि मंगाकर अपने आगे रखले, उसको पात्र से ढक कर उसका आवाहन करावे।

ॐ मुखं समस्त देवानां खांडवोद्यानदाहकम्। पूजितं सवयज्ञेषु अग्निमावाहयाम्यहम्॥ पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़े। (मन्त्रः)

ॐअग्निदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुते।

देवां आसादयादिह ॥

(हवन वेदीकामावाहनम्)

फिर पाधा हवन की वेदी का आवाहन करावे ।

विष्णुनालकरूपेण जगतां पतिनो धृतां । क्षमायुक्तां धरणीं च पृथ्वीमावाहयाम्यहम् ॥ [पूजनम्]

पूजन करे सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े

ॐस्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाःस्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो-अरिष्टनेमिःस्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

(अग्निस्थापनं कुर्यात्समाधाय)

फिर पाधा वेदी पर अग्नि रखकर उसके ऊपर लकड़ी रखदे ।

(वरणसङ्कल्पः) एक पान पर रोली, चावल, सुपारी, फूल, कलावा, दक्षिणा, अंगोछा ये सब सामग्री रख कर ब्रह्मा के वरण का संकल्प करे ।

अमुकगोत्रोहं अमुकशर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवन कर्मणि सांगताफल

सिद्धयर्थं श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीत्यर्थमेभिः गंधाक्षत पुष्पचन्दनताम्बूलपूगीफल दक्षिणा-वासोभिः अमुकगोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥

जिसको ब्रह्मा बनाया हो उस ब्राह्मण के पान पर जो कलावा रक्खा है उस से पौंची बांधे तथा यह मन्त्र पढ़े ।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया-प्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणाश्रद्धामा-प्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥१॥

(तिलकं कुर्यात्) तिलक करे । (मन्त्र)

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण-हिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥२॥

(वृतोस्मीति प्रतिवचनम्)

यजमान पाधा से ऐसा कहे ।

(यथाविहितं कर्मं कुरु)

जैसा शास्त्र में लिखा है वैसा सब कर्म कराइये

(करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा ऐसा कहें कि जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराऊंगा।

(ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा)

अग्नि से दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिये ढाक का एक पत्ता धरे

(तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य)

उस पत्ते के ऊपर पूर्व को अगला भाग अर्थात् फुलङ्गन रख कुशा फैलावें।

(ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणाक्रमेणानी-याऽत्रत्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय)

कुशाओं का ब्रह्मा बनावे और उस को अग्नि की परिक्रमा कराकर उन कुशाओं के ऊपर उत्तर को मुंह करके

(कल्पितासने उपवेशयेत्)

बनाये हुवे आसन पर रखदे।

(ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वा-

रिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्)

एक शकोरे में जल भरे फिर कुशाओं से ढके, शकोरे में ब्रह्मा का मुंह दिखावे और अग्नि से उत्तर की तरफ़ कुशा के ऊपर शकोरा धरे।

(ततः परिस्तरणम्) कुशा फैलावे।

(बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय)

१६ कुशा लेकर वेदी के चारों ओर इस प्रकार रखें।

(आग्नेयादीशानान्तम्) ४

अग्नि कोण से ईशान दिशा तक चार कुशा रखें।

(ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्) ४

ब्रह्मा से अग्नि तक चार कुशा धरे।

(नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्) ४

नैर्ऋत्य से वायव्य कोण तक चार कुशा धरे।

(अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्) ४

अग्नि से प्रणीतापात्र तक चार कुशा रखें।

(ततोऽग्नेरुत्तरतः) अग्नि से उत्तर की तरफ़

[पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं

कुशत्रयम्) पश्चिम में पवित्र छेदन के लिये क्रम से ३ कुशा धरे।

(पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भ कुशपात्रद्वयम्) पवित्र करने के लिये कुशा के बीच की कुशा निकाल कर धरे।

(प्रोक्षणी पात्रम्) एक प्रोक्षणी पात्र धरे।

(आज्यस्थाली) घी का कटोरा धरे।

(संमार्जनार्थं कुशत्रयम्)
मार्जन के लिये तीन कुशा धरे।

(उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयम्)
तीन कुशा गूंथकर उत्तर से पश्चिम की तरफ धरे।

(प्रादेशमात्रंसमिधस्तिस्रः)
अंगूठे से तर्जनी की बराबर तीन लकड़ी धरे।

(स्रुवः आज्यम्) स्रुवा तथा घृत धरे।

(षट्पञ्चाशदुत्तरयजमानमुष्टिशत-द्वयावच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रम्)
यजमान की दो सौ छप्पन मुट्ठी का पूर्णपात्र या एक लोटे या हंडले में चावल भरकर धरे।

(पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्) पवित्र छेदन कुशाओं से क्रमपूर्वक पूर्व की तरफ को धरी हुई सब कुशाओं को ठीक २ धरी हुई देख लेवे।

(अथ तस्यामेव दिशि असाधारण वस्तून्युपकल्पनीयानि) अनन्तर उसी दिशा में और सब वस्तु स्थापन करनी चाहिये।

[ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमिति]

पवित्र-छेदन कुशाओं से पवित्री की कुशा को प्रादेशमात्र छेदन करे।

[ततः सपवित्रीकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय] पाधा पवित्री की कुशाओं सहित प्रणीता का जल हाथ से तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डालें।

[अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा] अनामिका उङ्गली और अंगूठे के अग्रभाग में पवित्रे की कुशा को पकड़ कर।

(त्रिरुत्पवनम्)

प्रोक्षणी पात्र में से तीन बार ऊपर को छींटा दे।

(ततः प्रोक्षणीपात्रं सव्यहस्ते कृत्वा)

प्रोक्षणीपात्र को सीधे से बांये हाथ पर धरे।

(प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्)

प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र में तीन बार उसी कुशा से छींटा दे। (ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनम्) प्रोक्षणी पात्र के जल का सब जगह छींटा लगावे।

(ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्) अग्नि के और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रखदे।

(आज्यस्थाल्यामाज्य निर्वापः)

घी के कटोरे में घृत करके देखले कि घी में कुछ अशुद्ध वस्तु न हो।

(ततोऽधिश्रयणम्)

फिर घी का कटोरा अग्नि पर रखकर घी को ताले

(ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणाक्रमेण बन्हौ तत्प्रक्षेपः)

कुशा को जला कर घी के कटोरे के चारों तरफ फिरावे फिर उसे अग्नि में डालदे।

(पर्यग्निकरणम्) अग्नि को तेज करदे (ततः श्रुवप्रतपनं कृत्वा) स्त्रुवे को अग्नि से तपाले। (संमार्जनकुशानामग्रैरग्रं-मध्यैर्मध्यं मूलैर्मूलं श्रुवं संमार्जयेत्)

संमार्जन कुशाओं को लेकर स्त्रुवे के आदि (आरम्भ) में सिरे की कुशा लगावे।

[प्रणीतोदकेनाभ्युद्त्य]

प्रणीता के जल का स्त्रुवे पर छींटा लगावे।

पुनः स्त्रुवं प्रतप्य दक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्] स्त्रुवे को फिर तपा कर कुशा के ऊपर दक्षिण में धरे।

(आज्यस्याग्नेरवतार्य)

घी के कटोरे को अग्नि से उतार लेवे॥

[पुनराज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम्]

घी को तीन बार प्रोक्षणी की तरह फिर ऊपर

ऊपर को उछाले। (अवेद्य सत्युपद्रव्येतन्नि-
रसनं कृत्वा पुनः प्रोक्षणीवत्कुर्य्यात्)
घी को देखले कि कोई अपवित्र वस्तु नहीं है फिर प्रोक्षणी की तरह तीन बार ऊपर उछाले।

(तत उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय)
उपयमन कुशा बायें हाथ में उठाले

(उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा)
पाधा उठ कर प्रजापति का ध्यान करें।

(तूष्णीमग्नौ घृताक्ता पालाशसमिध-
स्तिस्रः क्षिपेत्)
पाधा चुप रहकर ढाक की तीन लकड़ी घी में भिगो अग्नि में डाले।

(तत उपविश्य)
कर्मकर्त्ता बैठ जाय

(सपवित्रःप्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रदक्षिण-
क्रमेणाऽग्निपर्युक्षणं कृत्वा)
प्रणीता के जल से पवित्रे सहित क्रमसे अग्नि के चारों ओर जल डाले॥

(पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय)

प्रणीता में पवित्रा धरदे (पातितदक्षिणजानुः) सीधा घोंटा झुका ले। (कुशेनब्रह्मणान्बारब्धः) घोंटे से लेकर ब्रह्मा तक कुशा फैलावे।

(समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतिं जुहोति)

स्रुवे से अग्नि में घी गेरे।

(तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः)

आहुति देने से स्रुवे का बचा हुआ घी प्रोक्षणी पात्र में भी डालता जाय।

(अथ स्वाहा)

अब पाधा हवन करावे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय ॥ इत्या-

ज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा इद-मग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय । (एता महाव्याहृतयः ।) ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअव-यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो बन्हितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ᳪ सि प्रमु-मुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नीवरु-णाभ्याम् । ॐ स त्वन्नो अग्ने वमो-भवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ । अवयद्त्वनो वरुणᳪरराणो वीहिमृडीकᳪसुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्नी-वरुणाभ्याम् ।

ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्ति पा-श्च सत्यमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ᳪ स्वाहा ॥ इदमग्नये ॥ ॐ ये ते शतं

वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वि-
तता महान्तः । तेभिर्नो अद्य स-
वितोत्त विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः
स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे
विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
स्वर्केभ्यः ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणपाशम-
स्मदवाधमं वि मध्यम ꣳ श्रथाय ।
अथाव यमादित्य-व्रते तवानागसो
आदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरु-
णाय ॥ (एता सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः
ततोऽन्वारब्धं बिना)

अब ब्रह्मा से घोंटे की कुशा को हटालें ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये
(इति मनसा प्राजापत्यम् ॥) ॐ
अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये
स्विष्टकृते । ॐ गणपतये स्वाहा ॥
इदं गणपतये । ॐ ब्रह्म यज्ञानं

प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः० स्वाहा । इदं ब्रह्मणे । ॐ विष्णो रराट० । स्वाहा ॥ इदं विष्णवे । ॐ नमःशम्भवाय च० स्वाहा ॥ इदं शंभवाय ॥

अथ नवग्रह होमः ॥ नीचे लिखे मन्त्रों से नवग्रह को आहुति दे । (समिद्धोमं कुर्यात्) आख की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से—

*ॐ आकृष्णेन० स्वाहा -इदं सूर्याय

ढाक की लकड़ी की आहुति दे। ॐ इमं देवा अ०। इदं चंद्राय । कत्थे की लकड़ी की आहुति दे। ॐ अग्निमूर्धा० । इदं भौमाय । चिरचिटे की लकड़ी की आहुति दे । ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने० । इदं बुधाय । पीपल की लकड़ी की आहुति दे, इस मन्त्र से—

ॐ बृहस्पते० । इदं बृहस्पतये ।

गूलर की लकड़ी की आहुति इस मन्त्र से दे ।

नोट— लकड़ी घी में लगाकर अग्नि में डालनी चाहिये ।
जहां २ गोल बिन्दु का निशान है वे मन्त्र पहिले पूरे आ चुके हैं ।

ॐ अन्नात्परि० । इदं शुक्राय ।
जांड की लकड़ी की आहुति इस मन्त्र से दे ।
ॐ शन्नो देवी० । इदं शनिश्चराय
दूब के नाल की आहुति इस मन्त्र से दे ।
ॐ कयानश्चित्र० । इदं राहवे ।
कुशा की आहुति इस मन्त्र से दे ।
ॐ केतुं कृण्वन्न० । इदं केतवे ।
ॐ अधिदेवेभ्यः स्वाहा । प्रत्यधि-देवेभ्यः- स्वाहा । पंचलोकपालेभ्यः स्वाहा । दशदिक्पालेभ्यः स्वाहा । वरुणदेवायस्वाहा वास्तुकाय स्वाहा । गौर्य्यादिषोडशमातृभ्यः स्वाहा । प्रधानदेवाय- स्वाहा । सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।

(अथ चरु आवाहनम्)

ॐ एतन्तेदेव० । इस मन्त्र से चरु की प्रतिष्ठा पूजन कर सामग्री चढ़ाकर हाथ जोड़े
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो० ब्राह्मणवरण

संकल्पः) एक पानपर रोली, कलावा, चावल, फूल, हार, सुपारी अंगोछा, दक्षिणा धर कर जो ब्राह्मण आहुति दे उसके वरण का संकल्प करे ।

अद्यास्मुकगोत्रोहं अमुक शर्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थमेभिर्गंधाक्षत-पुष्प-चन्दन - तांबूल-पूगीफल-दक्षिणावासोभिः अमुकगोत्रममुकशर्माणं होतृत्वेन त्वामहं वृणे

कलावा लेकर पोंची बांधे । मन्त्रः-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नो० । तिलक करे ।

ॐ नमो ब्रह्मण्यदे० ॥ (पुनः चरुहोमः)

पाठ करनेवाला जल चावल लेकर संकल्प करे ।

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्यो-नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमायाद्य श्रीब्रह्मणोन्हिद्वितीये प्रहराद्धें श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत-

मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैक-देशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफलप्राप्तिकाम-सिद्ध्यर्थं वर्तमान संवत्सरे अमुकायने भास्करे अमुकगोलावलम्बने ऽ मुक पक्षे ऽमुकतिथौ ऽमुकवासरे ऽमुक-गोत्रोहममुकशर्म्माहं संकलपापक्षय-पूर्वक सकलमंगलप्राप्त्यै सर्वानिष्ट निवारणार्थं सर्वत्र हर्षविजय-द्विपदे चतुष्पदे पशुबांधवकामः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती दे-वताप्रीतये आदौ गणेश मालया कवचार्गलकीलकैः रात्रि सूक्तं च नवार्णं आद्यंतयोः पद्मसूक्तँ च मा-र्कण्डेय उवाच इत्यारभ्य सावर्णि र्भविता मनुरित्यंतं सप्तशतीपाठ-

महं करिष्ये ॥

पहिले एक माला गणेशजी के मन्त्र की जप कर चरु की आहुति दे ।

(ॐ गणपतये स्वाहा) दुर्गा के तीनों कवच का पाठ करे। फिर इस मन्त्र से एक माला की आहुति दे। (मन्त्रः)

(ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा)

फिर देवी सूक्त का पाठ करे और (आहुति न दे) फिर दुर्गा का पाठ करे आहुतिदे जब पहला अध्याय पूर्ण हो जावे पाधा ये मन्त्र पढ़ें

ॐ जय जय मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सत्याः सन्तु (यजमानस्यकामः) जगदम्बार्पणमस्तु ॥ ऐसा बोलकर जल छोड़दें,

स्रुवे पर १ पान १ सुपारी चरु सब सामग्री धर कर आहुति वाला खड़ा हो जाय यजमान उसके सीधे कंधे पर अपना सीधा हाथ रखे और पाधा ये मन्त्र पढ़े ।

ॐ प्राणाय स्वाहा, पानाय स्वाहा

व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा ॥

(अग्नि में) कुशा से जल का छींटा लगावे ।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्यः श्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीं स्वाहा ॥

अग्नि में छोड़ दे फिर पांच आहुति घी की देवे ।

(ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शांताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्)

इसी प्रकार सब अध्यायों के अन्त में करना चाहिये और दुर्गा सप्तशती से नीचे लिखी विशेष आहुतियां निर्दिष्ट अध्यायों के मध्य देवें ।

इस मंत्र से शहद की आहुति देवे ।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् । मया त्वयि हते ऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवता स्वाहा ॥

इस मन्त्र से लाल चन्दन की आहुति देवे–

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः । ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप स्वाहा ॥

इस मन्त्र से खीर, हलवा या पेड़ा की आहुति देवे–

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते । स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोस्तुते स्वाहा ॥

इस मंत्र से गिलोय की आहुति देवे–

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति स्वाहा ॥

इस मन्त्र से काली मिर्च या सफेद सरसों की आहुति देवे–

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् स्वाहा ॥

इस मन्त्र से पालक अथवा बथुवे की आहुति देवे।

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्या-
म्यहं भुवि। तत्रैव च वधिष्यामि दुर्ग-
माख्यं महासुरम् स्वाहा ॥

इस मन्त्र से अनार की आहुति देवे-

रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी
कुसुमोमम् ॥

इस मन्त्र से सफेद चन्दन व कपूर की आहुति देवे-

भ्रामरीति च मां लोकास्ता स्तोष्य-
न्ति सर्वतः ॥

जब पाठ समाप्त हो तब एक माला नवार्ण मन्त्र की आहुति दे। (मन्त्रः)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे स्वाहा ॥

फिर हवन के दशांश का एक माला का तर्पण करे और तर्पण के दशांश का मार्जन करे। एक बर्तन में जल भरे, उसमें दूध गंगाजल भी डाले। फूल या दूर्वा लेकर आहुति देने वाले अपने हाथ में जल भर भर कर उंगलियों के ऊपर का

उसमें छोड़े। उसका नाम (तर्पण) है। अग्नि में छींटा लगाने को मार्जन कहते हैं।

(दशदिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात्)

वेदी के चारों तरफ दश दिशाओं में दस दीवे धर कर उन में १० घी की बत्ती बाले। दही, उड़द, सिंदूर ये भी उनके पास रक्खे।

(प्रतिष्ठां कृत्वा)

चावल लेकर प्रतिष्ठा करे।

ॐ एतन्ते देव० ॥

चावल छोड़े, पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े। (मन्त्रः)

ॐ इन्द्रो वन्हिः पितृ पतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत कुवेर ईशः पत्तयः ब्रह्मानन्त स्तथैव च ॥१॥

फिर संकल्प करे।

अमुकगोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं भो दश दिक्पालाः! दिशं रक्ष बलिं भक्षमम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता

तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव ॥

(क्षेत्रपालेभ्यो बलिं दद्यात्)

आटे का एक दीवा बनाकर चार बत्ती डालकर कड़वे तेल से चौमुखा बाले। दही, उड़द की दाल, सिंदूर, स्याही पैसा ये भी उसके पास डाल दे चावल लेकर प्रतिष्ठा करे। एतन्तेदेव० ॥

(पूजनं कृत्वा) पूजन करे फिर हाथ जोड़े।

ॐकरकलितकपालः कुंडली दण्ड-पाणिस्तरुणतिमिरनील व्याल यज्ञो-पवीती। क्रतुसमयसपर्याविघ्न-विच्छेदहेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

ॐ क्षेत्रपाल-शाकिनीडाकिनी-भूतप्रेतवेतालपिशाचसहिताय इमं बलिं समर्पयामि ॥

(संकल्पः) जल, चावल, पैसा ले।

अमुकगोत्रोहंऽमुकशर्माहं भो क्षेत्रपाल ! दिशांरक्ष बलिंभक्ष मम यजमानस्य

सकुटुंबस्य सपरिवारस्य आयुष्कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ॥

दीवे को वहां से उठवा दे। फिर उस जगह इस मन्त्र से जल का छींटा लगावे॥ (मन्त्रः)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा० ॥

(पूर्णाहुति दद्यात्)

स्रुवे पर घी का भरा नारियल और चरु धरे, उसकी चावल लेकर प्रतिष्ठा करे।

ॐ एतन्तेदेव० ।' चावल छोड़े, पूजन करे, सब सामग्री चढ़ावे फिर हाथ जोड़े। (मन्त्रः)

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवा ॥

फिर उसको लेकर खड़ा हो जाय, यजमान उसके सीधे कन्धे पर अपने सीधे हाथ में कुछ दक्षिणा लेकर रखले। (मन्त्रः)

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्निम् ॥ कवि ग्वं सम्राजमतिथिं जनाना-मासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा ॥

उस नारियल को अग्नि में धरदे फिर उसके ऊपर घी की धारा छोड़े इस मन्त्र से (मन्त्रः)

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत-धारेण सुप्वाकामधुक्षः ॥

(त्र्यायुषकरणम्)

स्रुवे से हवनकी भस्मी उठाकर अनामिका से पहिले अपने लगावे फिर यजमान के लगावे । (मन्त्रः)

(त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । माथे से ऊपर । कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् गलेसे । यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहु-मूले, सीधे कंधे पर । तन्नो अस्तु त्र्यायुष-मिति हृदि, छाती से लगावे ।

(संस्रवप्राशनम्) यजमान जरा सा स्रुवे पर से घी अनामिका उंगली से लगाकर खाले (आचमनम्) फिर आचमन करे (मन्त्रः)

नोटः-यजमान के भस्मी लगाते समय तन्नो की जगह तत्तो कहे ॥

ॐ गंगाविष्णु ३ त्रिवारं पठेत् ॥
(हस्तौ प्रक्षाल्य (हाथ धो डाले । (मन्त्रः)
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा ० ॥

इतना ये मन्त्र पढ़कर यजमान के ऊपर प्रणीता के जल का छींटा दे ॥

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यंच वयं द्विष्मः
(इति मंत्रेणैशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात्)

इस मन्त्र से प्रणीतापात्र को ईशान दिशा में उलटा करदे)

[ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्] यजमान पूर्ण पात्र पर एक मुद्रिका रखकर संकल्प करे ।

अमुकगोत्रोहं अमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि साङ्गताफल-सिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थमिदम्पूर्ण-पात्रं प्रजापतिदैवतं यथानामगोत्राय

अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥

वह जो ब्राह्मण ब्रह्मा बना है उसको देदे उसकी दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे ।

अद्यामुकगोत्रोहं अमुकनामशर्म्माहं दुर्गाहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षण-ब्रह्मकर्मप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं पूर्णपात्रम् अमुकगोत्रायऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

यह भी दक्षिणा उसीको दे दे ।

(ब्रह्मग्रन्थिविमोकः) ब्रह्मा की गांठ खोल दे ।

(अथबर्हिहोमः) वेदो के चारों तरफ की सब कुशायें उठा कर अग्नि में डालदे, इस मन्त्र से

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत ऽइमम्देव यज्ञ ४ं स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

आरती दुर्गे जी की

जय अम्बे गौरी जय श्यामा गौरी ॥

तुमको निशदिन धावें, ब्रह्मा विष्णुहरी । जै०
मांग सिंदूर विराजे, टीका मृग मद को ॥ २
उज्वल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नीको । जै०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै ॥ २
रक्तपुष्प गलमाला, कंठन पर साजै । जै०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ॥ २
कोटिक चन्द्र दिवाकर, तिनकी समजोती । जै०
केहरि वाहन साजत, खड्ग खप्परधारी ॥ २
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी । जै०
मधुकैटभ-दलहर्ता, महिषासुरघाती ॥ २
चण्ड अरु मुण्ड पछाड़े, असुरभय दूर करे । जै०
चौसठ योगिनी मङ्गल गावें, निरतकरत भैरो ॥ २
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डेरों । जै०
तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणी, तुम कमला रानी ॥ २
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी । जै०

भुजा चार अतिशोभित, खड़ग खप्पर धारी ॥ २
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी । जै०
ब्रह्मादिक इन्द्रादिक, रुद्रादिक धावें ॥ २
सुरनर मुनिजन सेवत, वाँछित फल पावें । जै०
दोभुज चार चतुर्भुज, अष्ट भुजते सोहें ॥ २
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहें । जै०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ॥ २
मालकेत में राजत, कोटि रतन जोती । जै०
शंकर तुम्हारो चेरो, निशिदिन गुणगाता । २
सुन्दर श्यामा गौरी, त्रिलोकी माता । जै०
काशी में विश्वनाथ विराजें, नन्दा ब्रह्मचारी ॥ २
नित उठ भोग लगावें, महिमा अधिकारी । जै०
आदि शक्ति की आरती, निशदिन जो गावे ॥ २
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥ जै०

फिर बूरा में पांचों मेवा मिला कर भगवती जी को भोग लगावे । उसमें से पांच आहुति अग्नि में छोड़े ॥ (मन्त्रः)

प्राणाय स्वाहा १ अपानाय स्वाहा २ उदानाय स्वाहा ३ व्यानाय स्वाहा ४ समानाय स्वाहा ५ ॥

जल की तीन आचमनी अग्नि में छोड़े। फिर अग्नि की परिक्रमा करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे ॥ एकं चण्डी रवौ सप्त तिस्रो दद्यात गणेश्वरः। चत्वारि केशवं दद्याच्छिवस्यार्द्धप्रदक्षिणा ॥१॥

अर्थ—देवी की १ सूर्य की ७ गणेश जी की ३ विष्णु की ४ और शिव की आधी परिक्रमा करनी चाहियें। फिर प्रसाद को बटवादे।

कुम्भात्तथैव जलेन यजमानं सिञ्चति

फिर कलसे के जल को यजमान के ऊपर आम के पत्ते से छींटा दे। मन्त्रः-आपो हिष्ठा

मयोभुवस्तानऊर्ज्जे दधातन महे-
रणाय चक्षसे ॥१॥ यो वः शिवतमो रस-
स्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मा-
तरः॥२॥ तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय
जिनन्वथ । आपोजन यथा च नः ॥३॥
गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो
गुरुर्भार्गवसूर्य्यनन्दनाः। राहुश्च केतुश्च
परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं
सदा ॥४॥ उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताश-
नस्त्रिविक्रमो भानुसखश्चतुर्भुजः ।
गन्धर्वयक्षोरगसिद्धचारणाः कुर्वन्तु
वः पूर्णमनोरथं सदा ॥५॥ नलो दधीचिः
सगरः पुरूरवाः शाकुन्तलेयो भरतो
धनंजयः । रामत्रयं वैन्यबली युधिष्ठिर
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ।६॥
मनुर्मरीचिर्भृगुदक्षनारदाः पाराशरो
व्यासशर्मिष्ठभार्गवाः । बाल्मीकि-
कुम्भोद्भवगर्गगौतमाः कुर्वंतु वः पूर्ण-

मनोरथं सदा ॥७॥ रम्भा शची सत्यवती च देवकी गौरी च लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मणी। कूर्मों गजेन्द्रः सचराचराधराः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥८॥ गंगा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा। सा चन्द्रभागा वरुणा त्वसी नदी कुर्वन्तु वःपूर्णमनोरथं सदा ॥९॥ तुङ्गप्रभासो गुरुचक्रपुष्करं गया विमुक्ता बदरी बटेश्वरः। केदारपम्पासरसश्च नैमिषं कुर्वंतु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥१०॥ शंखश्च दूर्वासितपत्रचामरं मणिः प्रदीपो वररत्नकाञ्चनम् सम्पूर्णकुम्भः सुहुतो हुताशनः कुर्वंतु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ११ ॥ प्रयाणकाले यदि वा सुमङ्गले प्रभातकाले च नृपाऽभिषेचने। धर्मार्थकामाय जयाय भाषितं व्यासेन कुर्यात्तु मनोरथं हि तत् ॥१२॥

अभिषेक के समय स्त्री को वामभाग में लेकर सपरिवार यजमान के ऊपर रुद्रकलश (शान्तिकलश) का जल पंचपल्लवों से छिड़के। उस समय ब्राह्मण उपरोक्त मन्त्रों को पढ़ते हुये मार्जन करें। इन मंत्रों में 'यस्य त्तयाय जिन्वथ' इस मन्त्र का मार्जन जल भूमि पर त्याग दे और शेष श्लोकों को पढ़ते हुये यजमान के शीश पर मार्जन जल छिड़के।

यजमान के तिलक करे (मन्त्रः)

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। तिलकं ते प्रयच्छन्तु धर्म-कामार्थसिद्धये॥

(कर्मकर्ता सुवर्णदक्षिणा संकल्पः)

अमुकगोत्रोहं अमुकशर्म्माहं श्री दुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-देवताप्रीत्यर्थमेतत्कर्मकारयित्रे अमुक-गोत्राय अमुकशर्मणे आचार्याय इमां सुवर्णादिदक्षिणाँ तुभ्यमहं सम्प्रददे।

हवन कराने वाले को देदे। इसकी दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे। मन्त्र-

अमुकगोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्री-दुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलसिद्धयर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती--देवताप्रीत्यर्थं कर्मकर्त्तै दानप्रतिष्ठा दक्षिणां आचार्येण तुभ्यमहं संप्रददे ॥

हवन कराने वाले को देदे ॥ (आहुति चन्द्र भई दक्षिणासंकल्पः) आहुति देने वालों को दक्षिणा का संकल्प करे।

अमुकगोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफल-सिद्धयर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवता प्रीत्यर्थमिमां आहुतिं रजितदक्षिणां अमुकगोत्रेभ्यो-ऽमुकनामशर्मणेभ्यो तुभ्यमहं संप्रददे।

यह दक्षिणा आहुति देने वाले को देदे।

(दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे)

अमुकगोत्रोहं ऽमुकशर्म्माहं अस्मिन् श्रीदुर्गाहवनकर्मणि सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं आहुति दान प्रतिष्ठा ताम्रमयि दक्षिणां अमुकगोत्रेभ्यो अमुकनामब्राह्मणेभ्यो तुभ्यमहं संप्रददे ।

यह दक्षिणा आहुति देने वाले को दिलवादे । फिर यजमान को नारियल, मीठा, फूल लेकर आशीर्वाद दे और ये मन्त्र पढ़े :-

यावत्तोयधराधरा धरधरा धाराधरा भूधरा यावच्चारुसुचारुचारुचमरं चामीकरं चामरम्। यावद्रावणरामरामरमणं रामायणं श्रूयते तावद्भोगविभोगभोगमतुलं भोगायते नित्यशः ॥१॥ लक्ष्मीस्ते पङ्कजाक्षी निवसतु भवने भारती कण्ठदेशे वर्द्धन्तां बन्धुवर्गाः प्रबलरिपुगणा यान्तु पातालमूले । देशे

देशे सुकीर्तिः प्रसरतु भवतां पूर्णकुन्दे-
न्दुशुभ्रा जीव त्वं पुत्रपौत्रैः स्वजन-
परिमितैर्भोज्यतां राज्यलक्ष्मीः ॥२॥
यावल्लीलातरङ्गैर्वहति सुर-नदी
जान्हवी पुण्यतोया यावच्चाकाशमार्गे
तपति सुरवरो भास्करो लोकपालः।
यावद्वज्रेन्द्र नीलस्फटिकमणि-शिला
विद्यते मेरुशृङ्गे तावत्त्वं पुत्रपौत्रै-
स्स्वजनपरिमितैर्भोज्यतां राज्यलक्ष्मीः
॥३॥ द्वौ तौ शंखकपालभूषितकरौ माल्या-
स्थिमालाधरौ देवौ द्वारवतीश्मशान-
निलयौ नागाऽरिगोवाहनौ । द्वित्र्यक्षौ
बलिदक्षयज्ञमथनौ श्रीशैलजावल्लभौ
पापं वो हरतां सदा हरिहरौ श्रीवत्स-
गंगाधरौ ॥५॥

ॐ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः
सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशो
ऽस्तु मित्राणामुदयोस्तु वः ॥

नारियल, मीठा और फूल यजमान की गोद में देकर यजमान के तिलक करे। मन्त्रः-

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिन स्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥१॥

फिर यजमान सब देवताओं पर चावल छोड़े, गणेश व लक्ष्मी जी को बचाकर। (मन्त्रः)

ब्रह्मांडे च गतो ब्रह्मा कैलाशे च महेश्वरः। बैकुण्ठे च गतो विष्णुर्देवाः स्वर्गे च संस्थिताः ॥१॥ सूर्यः कलिंगदेशे च यामुनं चन्द्रमागतः। मंगलश्चाप्ययोध्यायां कैलाशे च बुधोगतः ॥२॥ सिन्धुदेशे गतो जीवः शुक्रो भोजकटे तथा। शनिःसौराष्टदेशेच राहुदेशे मलेच्छगे ॥ ३ ॥ केतुश्च पर्वते देशे पाताले पन्नगा गताः सर्वो गच्छन्तु स्वस्थाने यजमान-

चरू की आहुति ६ मासे के अनुमान से बीच की दोनों उङ्गली और अंगूठा लगाकर देनी चाहिये इस हवन पद्धति के द्वारा हर प्रकार का हवन करा सकते हो केवल सँकल्प का अन्तर है। दुर्गा की जगह जिस देवता के निमित्त होम करना हो उसी का नाम लेना चाहिये। ब्राह्मण के यहां संकल्प में अमुक नाम शर्म्माहम्, क्षत्रिय के यहाँ वर्म्माहम्, वैश्य के यहाँ गुप्तोहम्, शूद्र के यहां दासोहम् कहना चाहिये।

* इति शुभम् *

तुलसी प्रेस, मेरठ।